Name :- Dr. Shahid Iqbal

Designation :- Guest Faculty

Mobile + Whtsp No :- 7004160257

Email ID :- Shahidlnmu@gmail.com

Faculty :- Commerce

College :- Marwari College, Darbhanga

Lecture Notes

Subject :- Business Studies

Class :- I. Com (11th)

Shahid Iqbal
Signature

Scanned with CamScanner

1. व्यवसाय की अवधारणा (CONCEPT OF BUSINESS)

अंग्रेजी शब्द (Business), Busy + Ness से बना है, जिसका अर्थ होता है व्यस्त रहना। (State of being busy) प्रत्येक मनुष्य किसी-न-किसी कार्य में हमेशा व्यस्त रहता है। यह व्यस्तता यदि धन उपार्जन के लिए की जाती है, तो वह व्यवसाय कहलाती है। अर्थात् वैध तरीकें से धन प्राप्त करनें के लिए की जानें वाली समस्त मानवीय क्रियायें व्यवसाय कहलाती हैं।

* मानवीय क्रियायें एवं उनके प्रकार (HUMAN ACTIVITIES AND THEIR TYPES)

मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो भी क्रियाएं करता है, उन्हें मानवीय क्रियाएं कहते हैं।

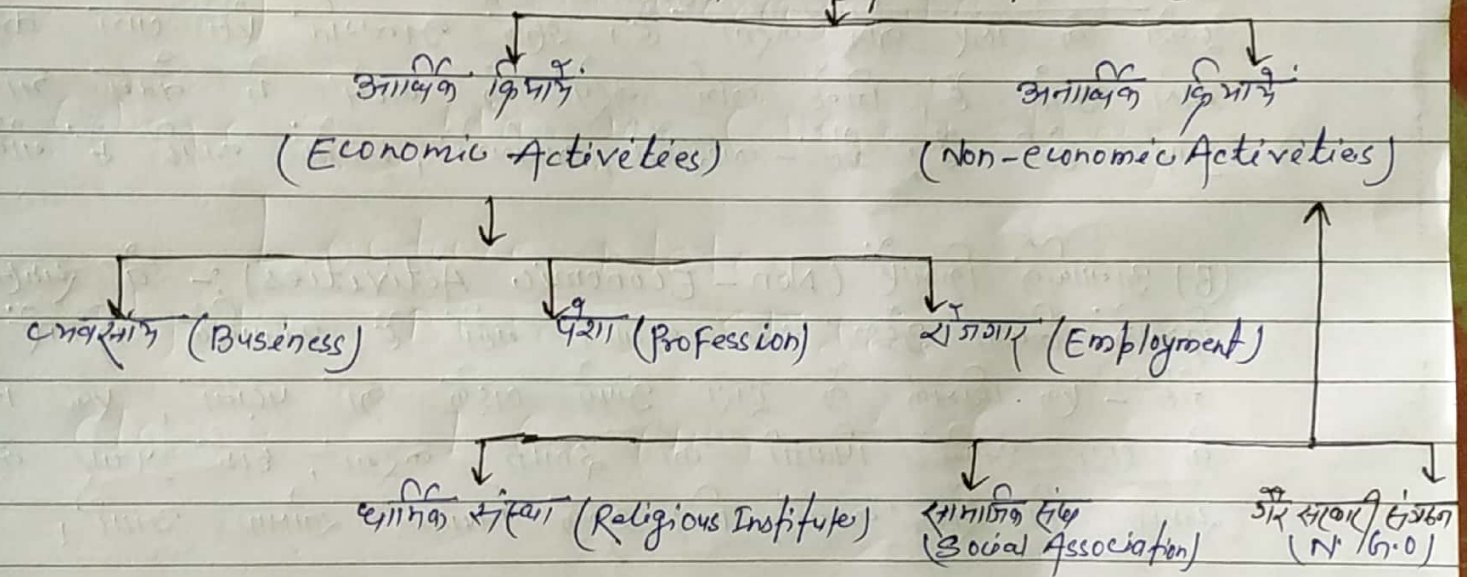

मानवीय क्रियायें (Human Activities) :- मानव द्वारा सम्पादित प्रत्येक क्रिया मानवीय क्रिया (Human Activity) कहलाती है। ये क्रियायें धन प्राप्ति के उद्देश्य से सम्पादित की जा सकती हैं या आत्म सन्तुष्टि के लिए की जा सकती हैं। इस आधार पर इन्हें दो भागों में बाँटा जा सकता है -

(A) आर्थिक क्रिया (Economic Activity) :- धन प्राप्त करनें के उद्देश्य से की गई क्रियाएं आर्थिक क्रियाएं कहलाती हैं। (All those activities which are undertaken to earn money are know as economic activities)

उदाहरणस्वरूप :- वस्तुओं का उत्पादन करना, वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना, चिकित्सा का कार्य करना, लेखाकर्म का कार्य करना, नौकरी करना, प्रबंधक का कार्य करना आदि। इन सभी क्रिया को करने से धन की प्राप्ति -

- होती है। अतः इसे आर्थिक क्रिया कहते हैं। आर्थिक क्रिया अग्रलिखित तीन प्रकार की होती है -

(1) व्यवसाय (Business) :- वे समस्त मानवीय क्रियायें जो वस्तुओं एवं विक्रय के लिए की जाती है, व्यवसाय कहलाती है।

(2) पेशा (Profession) :- पेशे से तात्पर्य उन आर्थिक क्रियाओं से है, जो विशेष ज्ञान, कौशल ट्रेनिंग एवं विशेषज्ञता के आधार पर की जाती है। विशेष ज्ञान एवं कुशलता के बल पर धन की प्राप्ति की जाती है। जैसे- वकील, चिकित्सक, चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट शिक्षक आदि।

(3) रोजगार (Employment) :- रोजगार से तात्पर्य धन के बदले दूसरों के लिए कार्य करना है। इसके अन्तर्गत ऐसे लोग कार्य करने वाले आते हैं, जिन्हें कार्य करने के बदले में वेतन या मजदूरी प्राप्त होती है; जैसे - कारखानों, कार्यालयों, दुकानों आदि में नौकरी करना।

(B) अनार्थिक क्रियाएँ (Non-Economic Activities) :- वे समस्त मानवीय क्रियायें जिनका उद्देश्य धन कमाना नहीं है, अनार्थिक क्रियाएँ कहलाती है, जैसे - एक शिक्षक के द्वारा अपने लड़के को पढ़ाना, एक चिकित्सक के द्वारा अपने पिताजी का इलाज करना, धर्म प्रचार करना, समाज की सेवा करना, निःशुल्क विद्यालय खोलना आदि।

(02) व्यवसाय का अर्थ (MEANING OF BUSINESS) :-
धन कमाने के लिए की गई मानव की प्रत्येक क्रिया व्यवसाय कहलाती है, यह क्रिया वस्तुओं का निर्माण, विनिमय एवं वितरण से सम्बन्धित हो सकती है। संकुचित अर्थ में व्यवसाय का आशय वस्तुओं के क्रय-विक्रय से ही लगाया जाता है, लेकिन विस्तृत अर्थ में व्यवसाय उन समस्त क्रियाओं का योग है, जो वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से लेकर अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचाने में की जाती है। यहाँ सेवाओं से तात्पर्य वस्तुओं के उत्पादन से लेकर अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचाने में की जाती है।

Scanned with CamScanner

(i) एल. एच. हैने के अनुसार :- "व्यवसाय से आशय उन मानवीय क्रियाओं से है, जो वस्तुओं के क्रय - विक्रय द्वारा धन उत्पादन अथवा धन प्राप्ति के लिये की जाती हैं।"

"Business may be defined as human activities directing towards producing or acquiring wealth through buying and Selling goods."

"मानव की सम्पूर्ण आर्थिक क्रियायें, जिनका उद्देश्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन, विनिमय एवं वितरण के द्वारा लाभ प्राप्त करना होता है, व्यवसाय कहलाती हैं।"

* व्यवसाय के तत्व, विशेषतायें एवं लक्षण

(ELEMENTS CHARACTERISTICS OR ESSENTIALS OF BUSINESS)

(1) उपयोगिता का सृजन (creation OF Utility) :- उपयोगिता का सृजन व्यवसायिक क्रियाओं का प्रमुख लक्षण है।

(2) व्यवहारों की नियमितता (Regularity in Dealings) :- वस्तुओं और सेवाओं के उसी विनिमय को व्यवसाय की संज्ञा दी जा सकती है, जो नियमित रूप से होता रहता है।

(3) लाभ का उद्देश्य (Profit Motive) :- समस्त मानवीय क्रियाओं का उद्देश्य लाभ कमाना होना चाहिए, तभी वह व्यवसाय कहलायेगा।

(4) जोखिम का तत्व (Elements OF Risk) :- व्यवसाय में जोखिम का तत्व अवश्य होता है। व्यवसाय हमेशा फूलों की सेज नहीं होता है, वरन् काँटों का ताज भी है। सुख - दुख हमेशा बना रहता है, परंतु भविष्य में लाभ की आशा से व्यक्ति जोखिम लेने को तैयार रहता है।

(5) वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय (Exchange of goods and Service) :- व्यवसाय में वस्तुओं एवं सेवाओं का लेन - देन होता है। बिना विनिमय का व्यापार नहीं हो सकता है।

(6) लाभ की अनिश्चितता (uncertainty of Profit) :- व्यवसाय में लाभ की गारंटी नहीं दी जा सकती है। व्यवसायिक उच्चावचन (Fluctuation) के कारण लाभ की अनिश्चितता बनी रहती है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

(7) समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति (Satisfying Social Needs) :- व्यवसाय की समस्त क्रियायें पूरे समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संचालित की जाती है। इसी दृष्टि से व्यवसाय को सामाजिक क्रिया भी कहते हैं और इसका सामाजिक उत्तरदायित्व भी है।

(8) वैधानिकता (Legality) :- व्यवसाय में उन्हीं आर्थिक क्रियाओं को सम्मलित किया जाता है, जो विधिमान्य हों।

(9) मानवीय आर्थिक क्रिया (Human Economic Activity) :- व्यवसाय मानव द्वारा संचालित आर्थिक क्रिया है।

(10) व्यापक क्षेत्र (Wide Scope) :- व्यवसाय का क्षेत्र आज समाज तक सीमित नहीं रह गया है। इसका क्षेत्र अब अन्तराष्ट्रीय हो चुका है।

(11) रोजगार के अवसर :- (Opportunity of Employment) :- व्यवसाय समाज के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है।

(3) पेशे का अर्थ (MEANING OF PROFESSION)

मनुष्य द्वारा संचालित प्रत्येक आर्थिक क्रियाएँ जिसको सम्पन्न करने के लिए विशेष ज्ञान, कौशल एवं अनुभव की आवश्यकता होती है, पेशा कहलाती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मानव की वह आर्थिक क्रिया, जिसको सम्पन्न करने के लिए विशेष ज्ञान प्राप्त करना होता है और उस ज्ञान का प्रयोग उन नियमों के अधीन करता है, जिनका निर्माण व्यक्तियों के एक संगठन द्वारा किया जाता है, जिसका वह स्वयं सदस्य होता है।

* वेबस्टर शब्दकोष के अनुसार "पेशा वह व्यवसाय है, जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करके दूसरे व्यक्तियों को निर्देशन, मार्गदर्शन या परामर्श देता है।"

"Profession is that occupation in which one possess to have acquired specialised knowledge which is used either in instructing guiding and advising others."

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि "पेशा विशेष ज्ञान, कौशल एवं अनुभव की बदौलत संचालित एक आर्थिक क्रिया है।"

पेशे की विशेषताएँ (CHARACTERISTICS OF PROFESSION)

सामान्यतया पेशे की निम्नलिखित विशेषतायें हैं —

(1) विशिष्ट ज्ञान (Specialised Knowledge) :- पेशे के लिए विशिष्ट ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता आवश्यक है। तकनीकी ज्ञान की बदौलत ही पेशे की क्रिया संचालित की जा सकती है।

(2) औपचारिक प्रशिक्षण (Formal Training) :- पेशे के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान औपचारिक रूप से प्रशिक्षण संस्थान से प्राप्त किया जाता है।

(3) पेशेवर संघ का होना (Professional Association) :- पेशे के संचालन एवं नियमन के लिए एक केन्द्रीय संगठन होता है और उस पेशे को संचालित करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए संगठन का सदस्य होना अनिवार्य है, जैसे - Bar Council of India, Medical Council of India, Institute of Chartered Accountants.

(4) आचार संहिता (Code of Conduct) :- एक पेशेवर संघ के सदस्य, संघ द्वारा निर्मित आचार - संहिता का पालन करने के लिए बाध्य होते हैं। इसके अन्तर्गत ईमानदारी, सत्यनिष्ठा एवं नैतिकता को सम्मिलित किया जाता है।

(5) सेवा भाव (Service Motive) :- पेशे के अन्तर्गत सेवा की भावना, धन अर्जित करने की भावना से अधिक महत्वपूर्ण होती है, इसी कारण पेशेवर लोगों को समाज में अधिक सम्मान मिलता है।

(6) ईमानदारी एवं नैतिकता (Honesty and Morality) :- पेशे में संलग्न व्यक्ति को ईमानदार होना चाहिए। उसमें नैतिकता का गुण प्रमाणित होना चाहिए, तभी वह अपने पेशे में सफल हो सकता है।

Scanned with CamScanner